बाइबल टीचर

वर्ष 17 नवम्बर 2020 अंक 12

सम्पादकीय

अपनी जवानी के दिनों में अपने सृजनहार को याद रख

सुलेमान राजा, संसार में एक बहुत बुद्धिमान राजा था। उसने परमेश्वर से कोई दौलत नहीं परन्तु बुद्धि मागीं थी। वही बुद्धिमान राजा कहता है कि "यदि मनुष्य बहुत वर्ष तक जीवित रहे, तो इन सभों से आनन्दित रहे; परन्तु यह स्मरण रखे कि अन्धियारे के दिन भी बहुत होंगे। जो कुछ होता है, वह व्यर्थ है। फिर वह कहता है, "हे जवान अपनी जवानी में आनन्द कर और अपनी जवानी के दिनों में मग्न रह; अपनी मनमानी कर और अपनी आंखों की दृष्टि के अनुसार चल। परन्तु यह जान रख कि इन सब बातों के विषय में परमेश्वर तेरा न्याय करेगा।" (सभोपदेशक 11:9) और 10वें पद मे वह कहता है, "अपने मन से खेद और अपनी देह से दुख दूर कर, क्योंकि लड़कपन और जवानी दोनों व्यर्थ है।"

पिछले कई महीनों से कोरोना महामारी ने सारे संसार की नींद हराम कर रखी है। लाखों लोग इस महामारी से अपनी जान गवां चुके है। कई जवान लोगों की भी इस रोग से मृत्यु हो चुकी है। रोजाना लोग मरते है और इस संसार से चले जाते है। कई बूढ़े लोगों को भी महामारी ने अपनी चपेट में ले लिया है। हम सब जो बूढ़े हैं और अपनी आयु में बढ़ रहे हैं बुद्धिमान व्यक्ति हमसे कहता है कि "सुन लो कठिन दिन आयेंगे" परन्तु बहुत से जवान लोग यह भूल जाते है कि एक दिन हम भी बूढ़े होंगे। यदि आप अभी तीस साल के हैं तो जल्द ही चालीस और पच्चास की उमर होने में समय नहीं लगेगा। जवान लड़के और लड़कियों को यह सोचना चाहिए कि उन्हें पता भी नहीं चलेगा कि उनकी आयु बढ़ चुकी है। कभी यह नहीं सोचना चाहिए कि हम हमेशा ऐसी ही रहेगें। आपने एक गीत सुना होगा जो कहता है कि "लड़कपन खेल में खेला, जवानी नींद भर सोया और बुढ़ापा देखकर रोया।" यह हमारे जीवन की एक वास्तविकता है।

बाइबल कहती है, "मनुष्य जो स्त्री से जन्मा है, वह थोड़े दिनों का और दुःख से भरा रहता है। (अय्युब 14:1)। भजन का लेखक कहता है, "तू मनुष्यों को धारा में बहा देता है, वे स्वप्न से ठहराते है, वे भोर को बढ़ने वाली घास के समान

होते हैं। वह भोर को फूलती और बढ़ती है, और सांझ तक कटकर मुर्झा जाती है। मित्रों यह जीवन बहुत छोटा है इसलिये परमेश्वर का भय मानकर हमें पृथ्वी पर अपना जीवन बिताना है। आगे भजन का लेखक कहता है कि "हमारी आयु के वर्ष सत्तर तो होते हैं और चाहे बल के कारण अस्सी वर्ष भी हो जाएं तौभी उनका घमण्ड केवल कष्ट और शोक ही शोक है, क्योंकि वह जल्द कट जाती है, और हम जाते रहते है।" (भजन 90:10) फिर एक बहुत महत्वपूर्ण बात लेखक कहता है, "हम को अपने दिन गिनने की समझ दे कि हम बुद्धिमान हो जाएं।" (12 पद)। मनुष्य मिट्टी से बना था और मिट्टी में मिल जाता है।

सभोपदेशक का लेखक कहता है कि धीरे-धीरे जब कठिन समय आयेगा तो हमारे शरीर में बहुत से बदलाव आयेंगे, इसलिये अपनी जवानी के आलम में परमेश्वर को अपना पार्टनर बनाकर चलें। क्योंकि जीवन की सच्चाई यह है कि एक समय आयेगा जब आप कहेंगे कि लड़कपन और जवानी दोनों व्यर्थ है; और अब मेरा मन किसी चीज में नहीं लगता। इससे पहले कि सूर्य और प्रकाश और चन्द्रमा और तारागण अंधेरे हो जाए, और वर्षा होने के बाद बादल फिर घिर आएं। वह कहता है उस समय घर के पहरूए (यानी हमारे हाथ) कांपेगे और बलवन्त (यानी टांगे) झुक जायेंगे। और पीसनहारियां (हमारे दांत) थोड़ी रहने के कारण काम छोड़ देगी और झरोखों में से देखने वालियां (आँखें) अंधी हो जाएगी। देखना कम हो जाएगा। और सड़क की ओर के किवाड़ (यानी हमारे कान) बंद होंगे, हमें बहुत कम सुनाई देने लगेगा और चक्की पीसने का शब्द धीमा होगा और तड़के चिड़िया बोलते ही एक उठ जाएगा (सोने में कठिनाई होगी) बार-बार नींद खुल जाएगी और सब गाने वालियों का शब्द धीमा हो जाएगा। (गाने में आवाज) कम हो जायेगी। फिर जो ऊंचा हो उससे भय खाया जायेगा (यानि शोर शराबा) अच्छा नहीं लगेगा। और मार्ग में डरावनी वस्तुएं मानी जाएंगी अर्थात चलते समय गिरने का डर लगा रहेगा। और बदाम का पेड़ फूलेगा (यनि बाल सफ़ेद) हो जायेगें। और टिड्डी भी भारी लगेगी यानि हल्की सी वस्तु भी भारी लगेगी, और भूख बढ़ाने वाला फल फिर काम न देगा यानि भूख बहुत कम लगेगी। क्योंकि मनुष्य अपने सदा के घर को जायेगा अर्थात सुलेमान कहता है मनुष्य की आत्मा परमेश्वर के पास चली जायेगी जिसने उसे दिया है। (सभोदेशक 12:1-5)।

फिर आगे वह कहताहै कि उस समय चांदी का तार दो टुकड़े हो जाएगा और सोने का कटोरा टूटेगा (अर्थात हृदय काम करना बंद कर देगा) और सोते के पास घड़ा फूटेगा और कुण्ड के पास रहट टूट जायेगा यानि शरीर आत्मा से अलग हो जायेगा।

सब जवानों को यह शिक्षा दी गई है कि "सब कुछ सुना गया; अन्त की बात यह है कि परमेश्वर का भय मान और उसकी आज्ञाओं का पालन कर, क्योंकि मनुष्य का सम्पूर्ण कर्त्तव्य यह ही है" (सभो. 12:13)।

बपतिस्मे की सुन्दरता और आवश्यकता

सनी डेविड

हर पुरुष और स्त्री की आवश्यकता पाप से उद्धार की है। मनुष्यजाति के लिए परमेश्वर का यह सबसे बड़ा संदेश है, "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नष्ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए" (यूहन्ना 3:16) परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा (रोमियों 5:8)। जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिए पाप ठहराया, कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं (2 कुरिन्थियों 5:21)। परमेश्वर ने अपने पुत्र को क्रूस पर मरने के लिए दे दिया ताकि वह हमारे पापों का प्रायश्चित बन सके। यह तो वह है जो हमारे उद्धार के लिए परमेश्वर ने किया है। अपने पापों से उद्धार के लिए हमें क्या करना आवश्यक है?

उद्धार के लिए परमेश्वर के मार्ग के अनुसार मसीह में विश्वास लाना कि वह पापियों के लिए मर गया, आवश्यक है; मन फिराना या पापों पर अज्ञानता से मुंह मोड़ना और पाप के लिए मर जाना आवश्यक है; परमेश्वर के पुत्र के रूप में मसीह का अंगीकार आवश्यक है; व फिर नये मनुष्य के गाड़े जाने और जी उठने को दर्शाने के लिए बपतिस्मा लेना या पानी में गाड़ा जाना या डुबोए जाना आवश्यक है। यही प्रक्रिया है जिससे व्यक्ति का आत्मिक रूप में नये सिरे से जन्म होता और वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए तैयार हो जाता है, जैसा कि यूहन्ना 3:5 में मसीह ने नीकुदेमुस को बताया था, मैं तुझ से सच-सच कहता हूं, जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।

उद्धार से उस शुभ समाचार को दर्शाने के लिए कि मसीह हमारे पापों के लिए मर गया और पवित्र शास्त्र के अनुसार गाड़ा गया और फिर से जी उठा, हम मन से विश्वास करते, पापों से मन फिराते, मुंह से अंगीकार करते और पानीमें बपतिस्मा लेते हैं (1 कुरिन्थियों 15:1-4)।

इसका अर्थ यह हुआ कि बपतिस्मा उद्धार के लिए आज्ञापालन के सबसे सुन्दर और आवश्यक कार्यों में से एक है। बपतिस्मे के कार्य के द्वारा मसीह की मृत्यु गाड़े जाने और जी उठने के सुसमाचार का प्रचार किया जाता है। उद्धार पाने से पहले, पापों की क्षमा पाई जाती है, और पवित्र आत्मा का दान पाने के लिए बपतिस्मा लेना आवश्यक है। सुनें कि उद्धारकर्ता ने क्या कहा है "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा (मरकुस 16:16)। ध्यान दें कि आत्मा से परिपूर्ण प्रेरित पतरस ने क्या सिखाया, मन फिराओ और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के

नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे (प्रेरित 2:38)।

बाइबल के अनुसार हर प्रकार की आत्मिक आशिषें मसीह में मिलती हैं (इफिसियों 1:3)। कुलुस्सियों 1:14 कहता है कि मसीह में हमें उसके लहू के द्वारा छुटकारा अर्थात पापों की क्षमा मिली है। अब सवाल यह है कि उन सभी आत्मिक आशिषों तथा उसके लहू के द्वारा छुटकारे अर्थात पापों की क्षमा तक पहुंचने के लिए हम मसीह में कैसे आए? प्रेरित पौलुस को इसका उत्तर देने दें। गलातियों 3:27 में उसने समझाया और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है। एक और जगह रोमियों 6:3–5 में पौलुस ने लिखा, क्या तुम नहीं जानते कि हम सब जिन्होंने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया। अतः उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें। क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे।

पवित्र शास्त्र के इन वचनों के द्वारा हमें बपतिस्मे के कार्य के बड़े महत्व का ही नहीं बल्कि यह भी पता चलता है कि कितनी खुबसूरती से बपतिस्मे का कार्य मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने, जी उठने के शुभसमाचार को दर्शाता और समझाता है। इसका अर्थ यह हुआ कि इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है कि अपने चेलों को अपना ग्रेट कमीशन देते हुए प्रभु ने बपतिस्मे को क्यों जोड़ा। मनुष्य के उद्धार के बड़े काम को पूरा कर लेने के बाद, स्वर्ग में वापस जाते हुए उसके अंतिम शब्द यही हैं, इसलिये तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ; और उन्हें पिता, और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो (मत्ती 28:19)।

पवित्र आत्मा का काम

जे. सी. चोट

पवित्र आत्मा का यह विषय इसलिये महत्वपूर्ण है क्योंकि बहुत से लोग पवित्र आत्मा और उसके काम के बारे में कई प्रकार की उलझन में पड़े हैं। एक और जहां बहुत से लोग उसे एक सिरे से नकारते हैं, परन्तु वहीं कुछ इतनी हद पार कर देते हैं कि वे दावा करते हुए सिखाते हैं कि पवित्र आत्मा आज वैसे ही आश्चर्यकर्मों के द्वारा कार्य करता है जैसे वह यीशु और प्रेरितों के समय में किया करता था और उनकी शिक्षा और दावों का आधार यही होता है। कई धार्मिक शिक्षकों के लिए परमेश्वरत्व के तीनों व्यक्तियों में पिता परमेश्वर और उद्धारकर्ता मसीह नहीं बल्कि केवल पवित्र आत्मा का मुख्य आकर्षण होता है। पर बाइबल क्या कहती है?

वचन बताता है कि पवित्र आत्मा परमेश्वरत्व में तीसरा व्यक्ति है, यानी वह एक व्यक्तित्व है। परमेश्वर तथा यीशु की तरह ही वह भी अनादि है यानी वह सदा से

है और सदा तक रहेगा। उसका योगदान सृष्टि की रचना और पुराने नियम में और पुराने नियम के काल की सब बड़ी घटनाओं में था। इस पाठ में हम मसीह और प्रेरितों के समय में उसके काम के बारे में सीखेंगे।

मसीह के जन्म की ओर वापस जाने पर वचन में हम पढ़ते हैं कि यीशु मसीह का जन्म इस प्रकार से हुआ, कि जब उसकी माता मरियम की मंगनी यूसुफ के साथ हो गई, तो उनके इकट्ठा होने से पहले ही वह पवित्र आत्मा की ओर से गर्भवती पाई गई। अत: उसके पति यूसुफ ने जो धर्मी था और उसे बदनाम करना नहीं चाहता था, उसे चुपके से त्याग देने का विचार किया। जब वह इन बातों की सोच में ही था तो प्रभु का स्वर्गदूत उसे स्वप्न में दिखाई देकर कहने लगा,

"हे यूसुफ! दाऊद की संतान, तू अपनी पत्नी मरियम को अपने यहां ले आने से मत डर, क्योंकि जो उसके गर्भ में है, वह पवित्र आत्मा की ओर से है। वह पुत्र जनेगी और तू उसका नाम यीशु रखना, क्योंकि वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा।"

यह सब इसलिये हुआ कि जो वचन प्रभु ने भविष्यदूक्ता के द्वारा कहा था, वह पूरा हो, देखो, एक कुंवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी और उसका नाम इम्मानुएल रखा जाएगा, जिसका अर्थ है- परमेश्वर हमारे साथ।

तब यूसुफ नींद से जागकर प्रभु के दूत की आज्ञा के अनुसार अपनी पत्नी को अपने यहां ले आया; और जब तक वह पुत्र न जनी तब तक वह उसके पास न गया; और उसने उसका नाम यीशु रखा (मत्ती 1:18-25)।

कृपया इस सब में पवित्र आत्मा की भूमिका को देखें। पवित्र आत्मा ने ही यशायाह भविष्यद्वक्ता को प्रेरणा देकर यह लिखवाया था कि इस कारण प्रभु आप ही तुम को एक चिन्ह देगा। सुनो; एक कुंवारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखेगी (यशायाह 7:14)। बाद में हम देखते हैं कि पवित्र आत्मा की सामर्थ से मरियम एक बालक को जन्म देती है। अंत में यह सब इसलिए हुआ ताकि भविष्यवक्ता के द्वारा जो वचन यहोवा की ओर से कहा गया था वह पूरा हो कि एक कुंवारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी, और उसका नाम एम्मानुएल रखेगी।

लूका अध्याय 1 के अनुसार जकर्याह तथा इलीशिबा के यहां भी पवित्र आत्मा की सामर्थ से एक बालक का जन्म हुआ था। उसका नाम यूहन्ना रखा गया और बाद में वह यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के नाम से प्रसिद्ध हुआ क्योंकि वह परमेश्वर की इच्छा को मानने वालों को बपतिस्मा देता था। मसीह के पूर्वगामी के रूप में जिसे प्रभु का मार्ग तैयार करने के लिए भेजा गया था, उसने कहा, मैं तो पानी से तुम्हें मन फिराव का बपतिस्मा देता हूं, परन्तु जो मेरे बाद आने वाला है, वह मुझ से शक्तिशाली है; मैं उसकी जूती उठाने के योग्य नहीं। वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा। उसका सूप उसके हाथ में है, और वह अपना खलिहान अच्छी रीति से साफ करेगा, और अपने गेहूं को तो खत्ते में इक्ट्ठा करेगा, परन्तु भूसी को उस आग में जलाएगा जो बुझने की नहीं।

उस समय यीशु गलील से यरदन के किनारे यूहन्ना के पास उससे बपतिस्मा लेने

आया। परन्तु यूहन्ना यह कह कर उसे रोकने लगा, मुझे तो तेरे हाथ से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है और तू मेरे पास आया है? यीशु ने उस को यह उत्तर दिया, अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है। तब उसने उसकी बात मान ली।

और यीशु बपतिस्मा लेकर तुरन्त पानी में से ऊपर आया और देखो, उसके लिए आकाश खुल गया, और उसने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर के समान उतरते और अपने ऊपर आते देखा। और देखो, यह आकाशवाणी हुई यह मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं अत्यंत प्रसन्न हूं (मत्ती 3:13-17)।

जैसे कि हम ने पहले देखा, कि मरियम पवित्र आत्मा की सामर्थ से गर्भवती पाई गई थी जिससे मसीह का जन्म संसार में हुआ। एक व्यस्क के रूप में अब हम यीशु को यूहन्ना से बपतिस्मा (पानी में डुबकी) लेते हुए देखते हैं। पिता की स्वीकृति के प्रमाण के रूप में परमेश्वर का आत्मा उतरा और परमेश्वर ने कहा, यह मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं अत्यंत प्रसन्न हूं।

मत्ती 4:1 में वचन कहता है, तब आत्मा यीशु को जंगल में ले गया ताकि इबलीस से उसकी परीक्षा हो। वह शैतान की चुनौतियों और परीक्षा का सामना कैसे कर पाया? हर बार उस ने पवित्रशास्त्र में से उत्तर दिये, जिसके लेखकों को पवित्र आत्मा की प्रेरणा दी गई थी।

यूहन्ना 3:34 में हम पढ़ते हैं कि यीशु को आत्मा नाप-नाप कर नहीं मिला था जिसका अर्थ है कि पवित्र आत्मा की सामर्थ भरपुर मिली थी, जिससे वह उस संसार में जिसमें काम करने वह आया था काम कर सका। परन्तु इसे हम ऐसे भी देखते हैं दूसरों को आत्मा नाप कर मिला था यानी उनके लिए इस की सीमाएं थीं कि वे पवित्र आत्मा की सामर्थ के साथ क्या कर सकते हैं या क्या नहीं।

मसीह ने अपने प्रतिनिधि बनाने और अपने काम को आगे बढ़ाने के लिए बारह पुरुषों को चुना था। इन लोगों को प्रेरित भी कहा जाता था। प्रेरित होने की एक योग्यता यह थी कि वह यीशु की सेवकाई के आरंभ से लेकर उसके जी उठने के समय तक बराबर उसके साथ रहा हो। यह विशेष शर्त इस बात को दिखाती है कि हमारे बीच में आज कोई प्रेरित नहीं है। धार्मिक जगत में कुछ लोग चाहे इस सम्मान को पाने का दावा करते हैं।

यह जानते हुए कि वह जी उठे प्रभु के रूप में स्वर्ग में पिता के पास लौट जाएगा, यीशु ने अपने प्रेरितों से कहा, तोभी मैं तुम से सच कहता हूं कि मेरा जाना तुम्हारे लिये अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊं तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा; परन्तु यदि मैं जाऊंगा तो उसे तुम्हारे पास भेजूंगा (यूहन्ना 16:7)। सहायक की पहचान करते हुए उसने फिर कहा, परन्तु सहायक अर्थात पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा और जो कुछ मैंने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा (यूहन्ना 14:26)।

यीशु की प्रतिज्ञा के अनुसार प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दिए जाने के बाद सहायक अर्थात पवित्र आत्मा ने कई काम करने थे (प्रेरितों 2)। उसने उनका सहायक होना था, उन्हें सब सत्य का मार्ग बताना था, उन सब बातों को स्मरण कराना

था जो यीशु ने उन्हें बताई थीं, उन्हें अन्य भाषाएं बोलने के योग्य बनाना था और लोगों को यकीन दिलाने के लिए कि उन्हें परमेश्वर की ओर से भेजा गया था, उन्हें आश्चर्यकर्म करने थे।

परन्तु प्रेरितों ने वह सब काम जो किया जाना आवश्यक था, कुछ लोगों का हाथ रखकर करना था। प्रेरितों 6 में हम पढ़ते हैं कि प्रभु ने उन्हें चुने हुए चेलों पर हाथ रखने के योग्य बनाया ताकि उन्हें भी पवित्र आत्मा के द्वारा आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ मिल सके। एक ओर जहां प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा देने का नाप मिला था और वे दूसरों पर हाथ रखने के द्वारा उन्हें आश्चर्यकर्म करने की शक्ति दे सकते थे, दूसरी ओर वे चेले जिन्हें पवित्र आत्मा का हाथ रखने का नाम मिला था दूसरों को आश्चर्यकर्म करने की शक्ति आगे नहीं दे सकते थे। अपने अध्ययन में इस पर हम आगे और सीखेंगे।

अंत में, प्रेरितों 2:38 के अनुसार पापों को धोने के लिए पानी में बपतिस्मा लेने के समय दूसरे सब लोगों को आत्मा का साधारण या गैर चमत्कारी नाप मिला।

पवित्र आत्मा ने प्रेरितों के द्वारा और उनके द्वारा जिनके ऊपर प्रेरितों ने हाथ रखे थे, उन्हें आश्चर्यकर्म करने की शक्ति देने और परमेश्वर का वचन लिखने की प्रेरणा देने के द्वारा काम किया। उस वचन की शिक्षा के अनुसार नया नियम पूरा हो जाने के बाद आत्मा आज वचन के द्वारा और हमारे साथ यानी उस वचन की शिक्षा के अनुसार काम करता है।

धोखा देने का अंजाम

डॉ. एफ. आर. साहू

जब इब्रानियों की पुस्तक को हम पढ़ते हैं तो हमें वहां लेखक आज्ञा न मानने के परिणाम के विषय में बताता है। लेखक कहता है, "क्योंकि सच्चाई की पहचान प्राप्त करने के बाद यदि हम जान बूझकर पाप करते रहें तो पापों के लिये फिर कोई बलिदान बाकी नहीं।" पुराने नियम में पशुओं के बलिदान चढ़ाये जाते थे जिनके द्वारा पाप क्षमा नहीं होते थे बल्कि आगे बड़ा दिये जाते थे। आज प्रभु यीशु के बलिदान के द्वारा मनुष्य के पाप क्षमा कर दिये जाते हैं क्योंकि वह हमेशा के लिये क्रूस पर बलिदान हो गया था। अब कोई बलिदान बाकी नहीं है। परन्तु आज बहुत से मसीही लोग बपतिस्मा लेने के पश्चात भी जानबूझकर पाप करते रहते हैं।

बाइबल बताती है कि यदि हम भलाई करना चाहते है और नहीं करते तो यह पाप है। और यदि हम किसी को धोखा देते हैं तो यह पाप है। हम किसी के साथ यदि विश्वासघात करते है तो यह भी पाप है। एक दूसरे से झूठ बोलना भी पाप है। अब यदि हम मन न फिराये और पाप करते रहे तो और कोई बलिदान बाकि नहीं है। केवल भयंकर परिणाम हमारे सामने है। और वो है दण्ड। कई बार हम अपने वचनों पर नियंत्रण नहीं कर पाते और अपनी जुबान पर लगाम नहीं लगाते तब भी हम पाप करते है। (मत्ती 12:36-37, याकूब 3)।

कई लोग अपनी बात से मुकर जाते है। कईबार लोग कोई वायदा करके बदल जाते है। यह बात बिल्कुल उचित नहीं है, यानि यह एक प्रकार का धोखा है। बाइबल में हम पढ़ते है कि कई लोगों ने दूसरों के साथ धोखा किया था और उसका अंजाम उन्हें भुगतना पड़ा। जैसे कि यहूदा इस्क्योरिती ने किया था, उसने अपने यीशु को धोखा दिया और बाद में फांसी लगाकर मर गया। हनन्याह और उसकी पत्नी सफीरा ने झूठ बोला और प्रेरितों तथा प्रभु को धोखा दिया। ऐसा ही कलीसिया में कई मसीही लोग भी करते है जो कि सही नहीं है। आदम और हव्वा ने भी परमेश्वर को धोखा दिया और भी अन्य उदाहरण हम बाइबल से देख सकते हैं। लोभ मनुष्य को परमेश्वर का तिरस्कार करने को बाध्य कर देता है। (भजन 10:3) दाऊद ने भी अपने अधिकारी को धोखा दिया यानि उसने उरियाह की पत्नी को अपनी पत्नी बताकर उसके साथ व्याभीचार किया और इसका परिणाम भी उसे भुगतना पड़ा यानि उसके बच्चे की मृत्यु हो गई। (2 शमुएल 11)।

अहाब ने नाबोत की दाख की बारी पाने की इच्छा से उसके साथ धोखा किया। बाद में उसको इसका परिणाम भुगतान पड़ा। इसी प्रकार से बहुत से लोग जो अपना दबदबा बनाये रखने के लिये चिकनी चुपड़ी बातें करके लोगों से दोस्ती करते हैं और फिर उनके साथ विश्वासघात करते हैं। यह भी गलत है।

आज कलीसिया में भी ऐसे लोग पाये जाते है, जो हनन्याह और सफीरा की तरह झूठ पर झूठ बोल कर अपने लोगों को धोखा देते है। इब्रानियों 10:31 में हमें एक चेतावनी दी गई है कि "जीवते परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है।" बाइबल कहती है कि एक दिन हम सबको परमेश्वर के न्याय आसन के सामने खड़ा होना पड़ेगा (2 कुरि. 5:10)।

हम अपने कामों का लेखा जोखा देगें। (रोमियों 14:12)।

विशेष कर कई लोग पैसे लेन देन के मामले में इस तरह की बात को अंजाम देते हैं। किसी से पैसे लेने या अपने लोभ के लिये लाभ का कारण बनाते वक्त सब कुछ ठीक होता है पर मुकरने के समय अनेकों बहाने तथा झूठ छल का इस्तेमाल करते रहते है। किसी से अपना काम चलाना बहुत ही आवश्यक समझते है, पर उसे निभाना कोई जरूरी नहीं समझते। अर्थात काम चलाते समय तक मसीही भाई-बहन या मित्र है परन्तु बाद में वह कौन है क्या है कोई मतलब नहीं। अपनी इच्छा पूरी करने तक सब कुछ मीठा होता है लेकिन बाद में मानों जहर से भी कड़वा हो जाता है। और इसी कारण ऐसा वक्त भी आता है कि कलीसिया में पहले फूट और फिर दरार पड़ जाती है। और जिनके साथ ऐसी घटनाओं के कारण वे कलीसिया के साथ संगती को भी छोड़ देने में मजबूर हो जाते है। इस तरह का अनैतिक जीवन पॉस्टर, प्रचारक चाहे कोई भी हो एक मसीही के लिये पतन का कारण साबित होता है। क्योंकि पाप अधर्म है और ऐसे पापों के लिये फिर से प्रायश्चिय की कोई गुंजाइश नहीं जैसे लिखा है- "परन्तु जब धर्मी अपने धर्म से फिरकर टेंढे काम वरन दुष्ट से सब घृणित कामों के अनुसार करने लगे, तो क्या वह जीवित रहेगा? जितने धर्म के काम उसने किया हो, उनसे से किसी का स्मरण न किया जाएगा और जो विश्वासघात और पाप उसने किया हो उसके कारण वह मर जाएगा।" (यहेजकेल 18:24)।

जैसे लिखा है– "जब वे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की पहचान के द्वारा संसार की नाना प्रकार की अशुद्धता से बच निकले, और फिर उनमें फंसकर हार गए तो उनकी पिछली दशा पहली से भी बुरी हो गयी है। क्योंकि धर्म के मार्ग का न जानना ही उनके लिये भला होता कि उसे जानकर उस पवित्र आज्ञा से फिर जाते जो उन्हें सौंपी गयी थी।" (2 पतरस–2:20–21)।

बड़े ही दु:ख की बात है कि यदि एक मसीही विश्वासी दूसरे मसीही विश्वासी के साथ धोखाधड़ी करे या विश्वासघात करे तो वह उस दण्ड के परिणाम से कैसे बच निकलेगा? शायद बिलकुल नहीं। क्योंकि सच्चाई को जानने के बाद भी ऐसा करके वह पाप ही तो कर रहा है। और परमेश्वर की दृष्टि में यह वह पाप है जिसका कोई बलिदान शेष नहीं रह जाता है। क्योंकि ऐसा करके उसने अनुग्रह की आत्मा की निंदा की है और उसने यीशु के लहू को पांव तले रौंदा है। क्योंकि एक मसीही के लिये जीवते परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है।

इसलिये सावधान रहें और सतर्क रहें, क्योंकि सुसमाचार की पवित्र आज्ञा जो हमें एक बार सौंपी गयी है उससे अपने व्यवहारिक जीवन को अपवित्र न करे। इसलिये हर एक प्रकार के लेन–देन की स्थिति में हमें खराई और ईमानदारी के साथ लेन देन करना चाहिए, ताकि हम एक–दूसरे के सामने और परमेश्वर के सामने भी निर्दोष और निष्कलंक बने रहे। विशेष कर जैसा अपने लिये हम चाहते है वैसे ही दूसरों के हित की भी चिंता करें।

मैं मसीह की कलीसिया का सदस्य क्यों हूं?

क्योंकि इसका धर्मसार, विश्वास का अंगीकार या कलीसिया की नियमावली केवल बाइबल है

लिरॉय ब्राउनलो

1. इस विश्वास के कारण

मैं किसी ऐसे धार्मिक प्रबंध में भागीदार नहीं हो सकता, जिस का धर्मसार मनुष्यों का बनाया गया हो। मेरे इस विश्वास के कई कारण हैं, जैसे कि:

1. प्रेरितों के समय तथा पहली तीन शताब्दियों तक धर्मसार केवल बाइबल ही था। आज भी इसी धर्मसार का इस्तेमाल क्यों नहीं हो सकता। पहली शताब्दी में पाई जाने वाली कलीसिया की नियमावली जैसे किसी नियमावली को मैं नहीं मानता। मुझे तो वही नियमावली चाहिए जो उस कलीसिया की थी। उस नियमावली के लिए, मेरे पास बाइबल होनी आवश्यक है।

2. बाइबल हमें पूरी तरह से हर भले काम के लिए तैयार करतीहै, हम जानते हैं, "क्योंकि उसके ईश्वरीय सामर्थ ने सब कुछ, जो जीवन भक्ति से संबंध रखता है, हमें उसी की पहचान के द्वारा दिया है, जिसने हमें अपनी ही महिमा और सदगुण के अनुसार बुलाया है" (2 पतरस 1:3) कि हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने और सुधारने और धर्म की शिक्षा के लिए

लाभदायक है, ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए (2 तीमुथियुस 3:16, 17)। पवित्र आत्मा कहता है कि बाइबल हमें उपदेश, समझाने, सुधारने और धर्म की शिक्षा में और हर भले काम के लिए तैयार करने के लिए दी गई है। अब क्या मनुष्यों के धर्मसार मनुष्य को उपदेश देने, समझाने, सुधारने धर्म की शिक्षा देने और हर भले काम के लिए तैयार करने के लिए नहीं लिखे गए हैं? हां तो फिर किसी मानवीय धर्मसार को मानने की क्या आवश्यकता है, जो उसी उद्देश्य के लिए दिया गया है, जिसके लिए परमेश्वर ने बाइबल दी थी? बाइबल सुरक्षित है, परन्तु क्या मनुष्यों के धर्मसार सुरक्षित हैं? यहां तक कि उन्हें मानने वाले लोग भी मानते हैं कि उनमें कमियां है। तो फिर किसी ऐसी चीज के साथ क्यों जुड़े, जिसका आरंभ मनुष्य से हुआ हो और जो नाशवान हो जबकि आप किसी ऐसी चीज को मान सकते हैं, जो परमेश्वर की ओर से हो और अविनाशी हो? यदि कलीसिया के अगुवे भी किसी धर्मसार को लिखें, जिसमें न तो बाइबल में जोड़ा गया हो और न उसमें से कुछ निकाला गया हो, तो यह बिल्कुल बाइबल की तरह ही होगा। पर एक लगने वाले दो की क्या आवश्यकता है? इसका कोई औचित्य नहीं होगा।

3. यह केवल बाइबल के लिए ही कहा जा सकता है, इस पुरानी पुस्तक में है परमेश्वर का मन, मनुष्य की स्थिति, उद्धार का मार्ग, पापियों का हाल और विश्वासियों के लिए खुशी। इसकी शिक्षाएं पवित्र है, इसके उपदेश माननीय है। इसके इतिहास सत्य है, इसके निर्णय अटल हैं। बुद्धि पाने के लिए इसे पढ़ना, उद्धार पाने के लिए मानना और पवित्र रहने के लिए इसके अनुसार चलना जरूरी है। यह मार्ग दिखाने के लिए रोशनी और जीवित रखने के लिए भोजन और खुशी देने के लिए सुख है। यह यात्री के लिए मशाल, मुसाफिर की लाठी, जहाज के कप्तान के लिए दिशा-सूचक सिपाही की तलवार और मसीही का संविधान है। इससे स्वर्गलोक में वापसी, स्वर्ग का द्वार खुल जाता है और नरक का पद हट जाता है। इसका मुख्य विषय है हमारी भलाई के लिए बनाई और इसका लक्ष्य परमेश्वर की महिमा है। हमारे विवेक में इसकी याद मन पर इसका राज और कदम इसकी अगुआई में चलना आवश्यक है। इसे धीरे-धीरे तथा बार-बार और प्रार्थना सहित पढ़ें। यह धन की खान है, स्वर्ग की शान और आनन्द की धार है। यह जीवन में आपको मिली है, न्याय के समय खोली जाएगी और सदा तक रहेगी। इसमें सबसे बड़ी जिम्मेदारी सबसे बड़ी मजदूरी का इनाम है और अपने पवित्र वचन से छेड़छाड़ करने वाले सब लोगों को यह दोषी ठहराती है। मनुष्यों का बनाया गया कोई धर्मसार यह दावा नहीं कर सकता। ऐसे धर्मसार कितने व्यर्थ हैं।

4. कमियां होने के कारण मनुष्यों के धर्मसारों में कुछ वर्षों बाद सुधार किया जाता है। मनुष्यों के धर्मसार मानने वाले किसी चेले को यह पता नहीं होता कि दस साल बाद उसकी शिक्षा का क्या होगा। जो कलीसिया वर्षों से यह सिखा रही थी कि बच्चे जन्म से पापी होते हैं, तीन-चार साल पहले उन्होंने अपने धर्मसार को बदलकर यह सिखाना शुरू कर दिया कि बच्चे जन्म से दुष्ट, घृणित और बुरे नहीं होते। इस धर्मसार का समर्थन करने वाले सदस्यों को पलट जाने के लिए कहा गया। यह तो

केवल एक उदाहरण है। मनुष्यों द्वारा बनाए गए धर्मसार बदलते रहते है और उन्हें संशोधित किया जाता है। इसी बात से उनके निर्बल और अपूर्ण होने का पता चल जाता है।

मनुष्यों के धर्मसार पुराने हो सकते हैं और उनकी जगह नये लाए जा सकते हैं, पर बाइबल वही रहती है और कार्य करती है। यह इसलिए वैसे की वैसे रहती हैं, क्योंकि इसमें बदलाव की आवश्यकता ही नहीं हैं। मसीह का सुसमाचार सम्पूर्ण है और इसे स्वतंत्रता की सिद्ध व्यवस्था कहा गया है (याकूब 1:25)। यह सिद्ध है और किसी भी व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह पर, जो इमसें जोड़कर या इसमें से निकालकर इसे बिगाड़ते हैं, श्राप है (गलातियों 1:6-9; प्रकाशितवाक्य 22:18-19)। परमेश्वर का वचन सिद्ध है और उसने मनुष्य को इसमें सुधार करने की कभी अनुमति नहीं दी। मूसा के समय में भी परमेश्वर ने कहा था, जो आज्ञा मैं तुम को सुनाता हूं उसमें न तो कुछ बढ़ाना और न कुछ घटाना (व्यवस्थाविवरण 4:2)।

5. मनुष्यों के धर्मसारों का बचाव नहीं किया जा सकता। नीचे बैंजामिन फ्रैंक्लिन की पुस्तक से एक उद्धाहरण हैं:

पहली बात तो यह है कि कोई भी धर्मसार, जिसमें बाइबल से अधिक है, आपत्तिजनक है क्योंकि इसमें बाइबल से अधिक बताया गया है। **दूसरी,** कोई भी धर्मसार, जिसमें बाइबल से कम है, आपत्तिजनक है, क्योंकि बाइबल से कम है। **तीसरी,** बाइबल से अलग कोई भी धर्मसार आपत्तिजनक है, क्योंकि यह बाइबल से भिन्न है। **चौथी,** संक्षेप में बाइबल के जैसा कोई भी धर्मसार व्यर्थ है, क्योंकि हमारे पास तो बाइबल है।

इसमें सब बातें आ जाती है। कोई और विचार हो ही नहीं सकता। किसी धर्मसार में बाइबल से अधिक, बाइबल से कम इससे भिन्न या संक्षेप में इसके जैसा ही होगा। कोई मनुष्य इस आधार पर कि इसमें बाइबल से अधिक है, बाइबल से कम है या यह बाइबल से अलग है, या संक्षेप में इसके जैसा है, कहकर अपने धर्मसार का बचाव नहीं करता। यदि इन बातों में से किसी के आधार पर किसी धर्मसार का बचाव नहीं होता, तो फिर किस आधार पर हो सकता है? निश्चय ही मनुष्य के लिए और आधार नहीं है।

6. जो लोग मानव लिखित धर्मसारों के प्रति निष्ठावान है, वे बाइबल का बचाव करने में अक्षम है। उनका समर्थन करने के कारण वे परमेश्वर के वचन की पूर्णता की बात नहीं कर सकते। अपने विश्वास को वे अपने कामों से दिखाने में नाकाम है (याकूब 2:18)। वास्तव में अपने कामों से वे इसमें अपने विश्वास की कमी को दिखा रहे हैं। यदि कोई मनुष्य बाइबल को और केवल बाइबल को धर्मसार के रूप में नहीं लेता, तो वह सफलतापूर्वक इसकी पैरवी नहीं कर सकता। एक प्रचारक के लिए जिसकी अपनी शिक्षा बाइबल के अलावा किसी दूसरी पुस्तक से संचालित हो, बाइबल की शिक्षा की पैरवी करना बिल्कुल असंभव है। यह अन्तर इसमें उसके भरोसे का और इसके प्रति श्रद्धा की कमी का प्रमाण है। नास्तिक तो कहेंगे, "हे प्रचारक हमें समझाओ कि यदि बाइबल सच्ची है, तो तुम्हारे पास बाइबल के अलावा कोई दूसरा धर्मसार क्यों है? यदि यह सच्ची है, जैसा कि आप मानते हैं कि यह उपदेश

देने, समझाने सुधारने और धर्म की शिक्षा के लिए और हर भले काम के लिए तैयार करने के लिए दी गई है, तो अपने मानवीय धर्मसार का औचित्य बताएं। आप धर्मसार को मानने वाले प्रचारक की उलझन और परेशानी की कल्पना कर सकते है।"

सौ से अधिक वर्ष पहले नास्तिकता का गोलियत, स्कॉटलैण्ड वासी रॉबर्ट ओवन अमेरिका में आया था। उसने वैसा ही काम किया, जैसा बहुत पहले पलिश्तियों के साथ गोलियत ने किया था, उसने परमेश्वर के लोगों को ललकारा, उसने मसीह के अनुयायियों को बाइबल की सच्चाई पर उसके साथ बहस करने के लिए भेजने को कहा। साम्प्रदायिक, धर्मसारों को मानने वाले प्रचारक उसकी चुनौती की पुकार सुनकर कांपते थे। क्यों? उन्हें पता था कि निराशजनक ढंग से उनकी स्थिति बचाव रहित है। उन्हें मालूम था कि ओवन उन्हें बाइबल के बजाय धर्मसारों को उचित ठहराने के लिए कहेगा कि समझाएं कि वे बाइबल में दिए गए नामों को क्यों नहीं अपनाते; और स्पष्ट करें कि वे बाइबल से बाहर की कलीसियाओं के सदस्य क्यों हैं? वे उससे थरथराते थे। परन्तु एक दाऊद उसकी चुनौती को स्वीकार करने के लिए खड़ा हुआ। वह व्यक्ति केवल मसीही था अर्थात वह केवल मसीह की कलीसिया का सदस्य था और बाइबल के अलावा किसी धर्मसार को नहीं मानता था। अमरीका में सच्चाई के लिए यह लड़ाई 13 अप्रैल 1829 से आरंभ हुई और आठ दिन तक चली। नास्तिकता का गोलियात ओवन बाइबल पर विश्वास करने वालों के परस्पर विरोध तथा इसके साथ मेल न खाने के अपने पंसदीदा हथियारों का इस्तेमाल नहीं कर सका। उसे चुनौती देने वाला किसी साम्प्रदायिक कलीसिया का सदस्य नहीं था अर्थात उसने किसी मानवीय नाम को नहीं अपनाया था और न ही किसी मानवीय धर्मसार को मानता था। नास्तिक हार गया। यह बाइबल और मसीही लोगों के लिए बहुत बड़ी विजय थी। विश्वास के इस पहरेदार का नाम अलेग्जैण्डर कैम्पबैल था। बहुत से प्रचारक यदि अपनी बचाव रहित स्थिति में न होते, तो यही काम कर सकते थे। लोग जब अपना समर्थन परमेश्वर को प्रेरणा रहित मनुष्यों के लिखे धर्मसारों को देते हैं तो वे बाइबल का बचाव नहीं कर पाते।

7. मनुष्य के धर्मसार फूट डालने वाले हैं। वे धार्मिक लोगों को गुटों और धड़ों में कांटते हैं। हर धर्मसार अपने ही मानने वालों को शामिल करने और दायर में रखने तथा दूसरे सब लोगों को बाहर करने की दीवार का काम करता है। ये दीवारें एकता से वास्तविकता बनने से पहले बुरी तरह से गिर जानी चाहिए। उन सब का गिर जाना आवश्यक है। एक साम्प्रदायिक कलीसिया दूसरी साम्प्रदायिक कलीसियाओं से मनुष्यों के बनाए किसी और धर्मसार के समर्थन के लिए अपने धर्मसारों का त्याग करने की उपेक्षा नहीं कर सकती। वे मनुष्यों के धर्मसारों को मानना चाहते हैं, तो वे उसी को मानेंगे, जो पहले से उनके पास है। जब मनुष्यों के धर्मसारों को निकाल दिया जाए, तो साम्प्रदायिकता के बंधन कमजोर होने लगेंगे और बंटे हुए लोग एकता के मार्ग पर आ जाएंगे।

2. तर्क वाक्य

इससे कोई इंकार नहीं कर सकता कि फूट पाप है। पवित्र आत्मा के संदेश पर ध्यान दे, हे भाइयों, मैं तुमसे यीशु मसीह जो हमारा प्रभु है, उसके नाम के द्वारा विनती

करता हूं, कि तुम सब एक ही बात कहो; और एक ही मत होकर मिले रहो। (1 कुरिन्थियों 1:10)। फूट पाप है, इसलिए मनुष्यों के धर्मसार पापपूर्ण है और उनका समर्थन करने वाले पाप के दोषी हैं।

कुछ तर्क देने और फिर निष्कर्ष निकालने से शायद कुछ स्पष्ट हो सके।

क. तर्कवाक्य एक

1. फूट पाप पूर्ण है (1 कुरिन्थियों 1:10; 353)।
2. मनुष्यों के धर्मसार फूट डालने वाले (खुलेआम स्वीकार किया जाता) है।
3. इसलिए, मनुष्यों के धर्मसार पापपूर्ण है।

ख. तर्कवाक्य दो

1. अलग-अलग नियमों के अनुसार चलना पाप पूर्ण है (फिलिप्पयों 3:16)।
2. मनुष्यों के धर्मसार अलग-अलग नियम (हर कोई मानता है) है।
3. इसलिए, मनुष्यों के धर्मसारों के अनुसार चलना पापपूर्ण है।

ग. तर्कवाक्य तीन

1. फूट अविश्वास को बढ़ावा देती है (यूहन्ना 17:20, 21)।
2. मनुष्यों के धर्मसार फूट को बढ़ावा देते हैं (सब मानते हैं)।
3. इसलिए, मनुष्यों के धर्मसार अविश्वास को बढ़ावा देते हैं।

इन निष्कर्षों को झूठा ठहराने का एक ही ढंग है कि छोटे या बड़े किसी भी तर्क को झूठा ठहराया जाए। यदि ये तर्क हैं, तो निष्कर्ष भी निर्विवाद है। वे सत्य है-इसलिए निष्कर्ष सही है।

यहोवा हमारा परमेश्वर एक ही है

जैरी बेट्स

अगले अध्ययन में हम परमेश्वर पिता और यीशु और पवित्र आत्मा की चर्चा करेंगे। पहली नजर में कोई कह सकता है कि ये तीन ईश्वर है, जिसका अर्थ यह हुआ कि मसीहियत वास्तव में बहुईश्वरवादी है। इसका दूसरा चरम यह मान लेना होगा कि एक ही परमेश्वर के तीन अलग-अलग रूप हैं। अन्य शब्दों में परमेश्वर तो केवल एक ही है परन्तु कभी उसने परमेश्वर पिता, कभी यीशु और कभी पवित्र आत्मा के रूप में बात की। यीशु इस एक परमेश्वर का ही रूप है जबकि अन्य समयों में परमेश्वर को आत्मा के रूप में दिखाया गया है। यह तीन ईश्वर होने की दुविधा को निकाल देता है, परन्तु हम बाइबल की शिक्षा के साथ इस शिक्षा को सही ठहराने की समस्या में उलझ जाते हैं।

परमेश्वर की शिक्षा के विचार को समझ पाना कठिन है। वास्तव में मेरा मानना है कि हम परमेश्वर को पूरी तरह से नहीं समझ सकते, पर इससे हमें हैरान नही होना चाहिए। परमेश्वर की बहुत सी बातें हैं जिन्हें मनुष्य पूरी तरह से नहीं समझ सकता। उदाहरण के लिए मनुष्य अनंतकाल के विचार को नहीं समझ सकता क्योंकि इस संसार में हर चीज का आरंभ और अंत होना है। परन्तु परिभाषा के अनुसार

अनन्तकाल का न तो कोई आरंभ और न ही अंत होगा। बेशक हम कुछ उदाहरण दे सकते हैं जिन्हें समझने में हमें सहायता मिल सकती है परन्तु कोई भी उदाहरण अनन्तकाल को सही सही समझाने में नाकाम होगा। यदि हम परमेश्वर की सब बातों और सब पहलुओं को समझ जाएं तो वह परमेश्वर ही नहीं होगा। जब हम यह सोचने लगते हैं कि हम परमेश्वर को पूरी तरह से समझते हैं, तो हमने परमेश्वर को एक मूरत बना दिया है और अब वह परमेश्वर नहीं रहा। हम किसी भी व्यक्ति अथवा वस्तु की चाहे वह कितना भी बड़ा क्यों न हो, जो मनुष्य से बड़ा नहीं है, आराधना नहीं करना चाहते।

इस समस्या को सुलझाने के प्रयास

इसमें हैरानी नहीं होनी चाहिए कि मनुष्य ने अपनी बहुत सी शिक्षाएं ईजाद कर ली हैं जो लगता है कि परमेश्वरत्व की समस्या को सुलझा देंगी। आईये कुछ प्रमुख समस्याओं पर ध्यान दें।

एक समाधान यीशु के परमेश्वर होने को पुनः परिभाषित करना है। यह विचार इस बात की शिक्षा देता है कि गर्भ में आने या अपने जन्म के समय यीशु किसी भी अर्थ में खुदा नहीं है बल्कि बाद में उसे परमेश्वर द्वारा गोद लिया गया और खुदा के पद पर ऊंचा किया गया। कोई यीशु को खुदा कह सकता है क्योंकि पृथ्वी पर उसके जीवन के समय परमेश्वर यीशु में और उसके द्वारा बड़ी मजबूती के साथ काम कर रहा था। यह बात यीशु के खुदा होने और परमेश्वर के बीच तनाव को हल कर देती है। यह उन बहुत से अन्य वचनों को नकार देती है और उनको अनदेखा करती है जो यीशु और परमेश्वर के बीच समानता और गर्भ में अपने आने बल्कि गर्भ में आने से भी पहले यीशु के परमेश्वर होने की बात भी बताते हैं।

एक और विचार है जिसकी बात हमने पहले की है और यह परमेश्वर को एक अभिनेता के रूप में दिखाता है जो नाटक में कई भूमिकाएं अदा करता हैं। परमेश्वर एक समय में परमेश्वर पिता की भूमिका अदा कर रहा होता है जबकि एक अन्य समय में वह यीशु की भूमिका अदा करता है और अन्य सदस्यों में वह आत्मा की भूमिका अदा करता है। इस प्रकार परमेश्वर तीन व्यक्ति नहीं बल्कि तीन अलग-अलग रूपों में केवल एक ही व्यक्ति है। यह ढंग परमेश्वर की एकता को बरकरार रखता है पर उन कई वचनों को अनदेखा करता है जिनमें तीनों को एक साथ दिखाया गया है। जब यीशु का बपतिस्मा हुआ था तो परमेश्वर ने स्वर्ग से बात की और आत्मा कबूतर की तरह यीशु पर उतरा (लूका 3:21-22)। पृथ्वी पर रहने के दौरान यीशु किससे प्रार्थना करता था? यह कहना बेवकूफी होगी कि यीशु अपने आप से प्रार्थना करता था। जब परमेश्वर मरियम की कोख में एक भ्रूण था तो वह संसार को कैसे पता चल सकता था? परमेश्वर का ज्ञान सचमुच में इतना सीमित कैसे हो सकता था जितना पृथ्वी पर रहते समय यीशु को था (उदाहरण मरकुस 13:32), यदि वह एक ही व्यक्ति था?

धार्मिक जगत का एक और सामान्य समाधान पिता और पुत्र के बीच संबंध को फिर से प्रभाषित करने का है। यह मानने के बजाय कि यीशु सनातन है, यह विचार यीशु को केवल एक सृजत जीव के रूप में यानी पहला और बेशक सबसे बड़ी

सृष्टि, परन्तु यीशु न तो सृजा हुआ जीव है पर परमेश्वर से कम। नये नियम के कुछ वचन इस विचार को समर्थन देते हुए लगते हैं। उदाहरण के लिए, यीशु ने कहा, "पिता मुझ से बड़ा है।" (यूहन्ना 14:28)। लूका 18:19 के साथ-साथ मरकुस 10:18 में यीशु ने परमेश्वर पिता से अपने आपको अलग किया जब उसने कहा, "तू मुझे उत्तम क्यों कहता है? कोई उत्तम नहीं, केवल एक अर्थात परमेश्वर।" परन्तु अन्य ढंगों की तरह यह विचार भी उन कई वचनों को अनदेखा कर देता है जो यीशु की सामर्थ और सनातन सुझाव की शिक्षा देते हैं जिन्हें हमने पाठ 2 में देखा था। नये नियम के वचन जो पिता के अपने पुत्र पर श्रेष्ठ होने को दिखाते हैं उन्हें आसानी से यीशु के परमेश्वर के गुणों को स्वेच्छा से छोड़ने का संकेत देते हुए समझा जा सकता है जैसा कि उसके देहधारी होने के समय फिलिप्पियों 2:5-11 में संकेत दिया गया है।

परमेश्वर एक है

यह शिक्षा पूरी बाइबल में मिलती है। यहूदी लोग आम तौर पर व्यवस्थाविरण 6:4, को दोहराते थे जिसे शेमा कहा जाता था, "हे इस्राएल सुन यहोवा हमारा परमेश्वर एक ही है।" यीशु ने भी मरकुस 12:29 में इस आयत को दोहराया। इन आज्ञाओं में पहली आज्ञा है, तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना। यशायाह ने कई अवसरों पर मूर्तिपूजा के विषय में बात की। केवल इन दो उदाहरणों को देखें, मैं सबसे पहला हूं, और मैं ही अंत तक रहूंगा, मुझे छोड़ कोई परमेश्वर है ही नहीं" (यशायाह 44:6)। ऐसी ही एक बात अगले अध्याय में मिलती है, "मैं यहोवा हूं और दूसरा कोई नहीं, मुझे छोड़ कोई परमेश्वर नहीं। (यशायाह 45:5)। 1 कुरिन्थियों 8:4 में पौलुस ने ऐसी ही बात कही, एक को छोड़ और कोई परमेश्वर नहीं। याकूब 2:19 से हमें पता चलता है कि दुष्टतामाएं भी यह विश्वास करती हैं कि केवल एक ही परमेश्वर है।

तीन एक कैसे हो सकते हैं? हम मनुष्यों की यह समस्या है। हम तीन अलग-अलग भौतिक वस्तुओं को एक में मिलने और इसके बावजूद तीन अलग अलग वस्तुओं के रहने की बात को नहीं समझते हैं।

विवाह और घर के लिए परमेश्वर की योजना
परपोते-परपोतियों की योजना बनाकर

कोय रोपर

भाग एक

सभी नाती-पोते बड़े महत्वपूर्ण हैं। मेरी बात पर यदि संदेह हो तो आप उनके दादा-दादी, नाना नानी से पूछ लें। परन्तु निष्पक्षता से कहें तो यह सच है कि दूसरे नाती-पोते दूसरों से बेहतर होते हैं। वे अधिक स्वस्थ, अधिक प्रसन्न, अधिक सफल और सबसे बड़ी बात की परमेश्वर के राज्य को ढूंढ़ने को पहले देने वाले अधिक होते हैं। अधिक संभावना

यही है कि विवाह होने पर आप बच्चों की योजना बनाएं और नाती-पोतों के होने की उम्मीद करें। क्या निष्पक्ष दृष्टिकोण से यह सुनिश्चित करने के लिए कि आपके नाती-पोते होंगे, आप कुछ करने की कोशिश कर सकते हैं?

पहले यह देखते हैं कि नवविवाहितों को नाती-पोतों के होने पर क्यों विचार करना चाहिए। (1) वे संभवतया निकट भविष्य में माता-पिता बन जाएंगे। अधिकतर दम्पत्तियों के आज नहीं तो कल बच्चे हो ही जाएंगे। वास्तव में बच्चों का होना विवाह के उद्देश्यों में से एक हैं। परमेश्वर ने प्रथम दम्पत्ति से कहा, "फूलो-फलो और पृथ्वी में भर जाओ" (उत्पत्ति 1:28)। इसी प्रकार परमेश्वर पुरुषों और स्त्रियों से आज भी यही चाहता है कि वे विवाह करें और बच्चे जनें (उसी क्रम में) ताकि मनुष्य जाति बनी रहे।

(2) जवानों को यह समझने की आवश्यकता होती है कि उनके लिए गए निर्णय आने वाली पीढ़ियों को प्रभावित करेंगे। अब्राहम और लूत के चरवाहों में झगड़ा होने पर, अब्राहम ने लूत को यह चुनने का अधिकार दे दिया कि वह जहां चाहे रह सकता है। लूत ने सदोम में रहना चुना था (उत्पत्ति 13:10-11)। यह ऐसा निर्णय था कि उसके भयंकर परिणाम उसके परिवार को भुगतने पड़े। बुरे निर्णयों के देर तक रहने वाले प्रभाव निर्गमन 20:5, 6 में भी दिखाए गए है:

तू उनको दण्डवत न करना और न उनकी उपासना करना; क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखने वाला ईश्वर हूं, और जो मुझ से बैर रखते हैं, उनके बेटों, पोतों, और परपोतों को भी पितरों का दण्ड दिया करता हूं, और जो मुझसे प्रेम रखते और मेरी आज्ञाओं को मानते हैं, उन हजारों पर करूणा किया करता हूं।

ये आयतें यह नहीं बताती कि बच्चे अपने माता-पिता का दोष मीरास में पाते हैं, बल्कि हमें याद दिलाती है कि बच्चों को तीसरी या चौथी पीढ़ी तक अपने माता-पिता के पापों के परिणाम भुगतने पड़ते हैं। इसके विपरीत परमेश्वर ने कहा कि यदि इस्राएली लोग आज्ञाकारी होते तो उसकी संतान आने वाली कई पीढ़ियों तक आशीषित होनी थी।

(3) माता-पिता के अपने बच्चों को प्रशिक्षित करने के ढंग से उनके परपोते-परपोतियां ही नहीं बल्कि उनकी आगे की संतान प्रभावित होगी। परमेश्वर ने पांचवीं आज्ञा सुनने के बाद भी "अपने माता और पिता का आदर कर" यह नियम स्वयं बताया और इसे मानने का कारण भी जोड़ा, जिससे जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उसमें बहुत दिन तक तू रहने पाए (निर्गमन 20:12)। इस आयत में यह चेतावनी थी कि यदि बच्चे विद्रोही होंगे तो जाति को निर्वासन सहना पड़ेगा। पौलुस ने नई वाचा के अधीन बच्चों के लिए यही नियम बताया (इफिसियों 6:1, 2)। आज भी विद्रोही बच्चों का आने वाली पीढ़ियों के लिए नकारात्मक प्रभाव ही होगा। अनुभव बताता है कि बच्चों का आज्ञाकारी होना या न होना अधिकतर इस पर निर्भर करता है कि उनके माता-पिता ने बचपन से उन्हें अधिकार वालों का आदर करना सिखाया है या नहीं।

इसलिए आपके परपोते-आशीषित होते हैं या श्रापित, यह कम से कम, कुछ सीमा तक इस बात पर निर्भर करता है कि आपने अपने बच्चों का पालन-पोषण कैसे किया। आप अपने बच्चों को उस ढंग से जिससे आपके परपोते-पोतियों को सुनहरा

भविष्य मिलने में सहायता मिले कैसे सिखा सकते हैं?

अपने स्वयं के स्वास्थ्य पर ध्यान करें

पहले आप ध्यान रखें। आपको और आपके पति या पत्नी को अपने शारीरिक स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। वरना आप उतनी उम्र तक नहीं पहुंच पाएंगे। जो कि अपने नाती-पोतों को देख सकें। अपना ध्यान क्यों रखें?

परमेश्वर ने आपके शरीरों को इस्तेमाल के लिए बनाया है, आपको जानबुझकर उनका दुरूपयोग करने का कोई अधिकार नहीं है (1 कुरिन्थियों 6:19, 20)।

पवित्र आत्मा मसीही लोगों में वास करता है, जिस कारण आप परमेश्वत्व का निवास स्थान हैं (प्रेरितों 2:38; 5:32; गलातियों 4:6; 1 कुरिन्थियों 3:16; रोमियों 8:9)। यदि आपका पति या पत्नी और आप मसीह नहीं हैं तो यह आपको अपने शरीरों का ध्यान रखने की विशेष जिम्मेदारी देता है।

विवाह होने पर आप एक-दूसरे व्यक्ति की देखभाल की जिम्मेदारी जोड़ लेते हैं, जो ऐसा कार्य है कि इसे आप बीमारी होने और जवानी में मर जाने पर पूरा नहीं कर सकते। इसलिए आप पर पूरी कोशिश स्वस्थ रहने और जब तक हो सके जीवित रहने की जिम्मेदारी है।

अपने विवाह पर ध्यान दें

दूसरा अपने विवाह को संभाले। आपका विवाह खुशहाल होने अर्थात देर तक चलने पर विवाह के निभ जाने के विपरीत आपके बच्चे अधिक सफल होंगे और उनके साथ-साथ उनके बच्चे भी। झगड़े वाले घर में बड़े होने वाले बच्चे को जवान होते और विवाह हो जाने के बाद ऐसी ही समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। वास्तव में किसी भी और बात से बढ़कर बच्चों को जिस बात की अधिक आवश्यकता है शायद वह विश्वास हैकि उनके पिता और माता-पिता एक-दूसरे से प्रेम करते और एक दूसरे को समर्पित हैं। ऐसे विश्वास से सुरक्षा की वह भावना मिलती है जो कहीं औरसे नहीं मिल सकती। जब आप अपने रोमांस को बनाए रखें कि सृजनात्मक ढंगों को खोजते और विवाह को काम करते रहने के लिए परमेश्वर के निर्देशों का समझदारी से पालन करके अपने साथी की आवश्यकताओं को पूरा करने की पूरी कोशिश करते हैं तो आप न केवल अपने जीवन और समाज को आशीषित कर रहे हैं, बल्कि आप अपने नाती-पोतों को भी आशीषित कर रहे हैं।

(शेष अगले अंक में)

मसीहीयत क्या है?

जोएल स्टीफ़न विलियम्स

मसीहीयत क्या है? इस लेख को मुख्य रूप से पाठक को यह जानकारी देने के लिये लिखा गया है कि एक मसीही किस तरह से बना जा सकता है, और उसके बाद एक अच्छा विश्वासी मसीही जीवन किस प्रकार से व्यतीत किया जा सकता है? इस लेख में हम उस मसीहीयत के बारे में देखेंगे जिसे पहली शताब्दी में प्रेरितों के समय में

माना जाता था। इस पुस्तक में आरम्भ की उसी मसीहीयत को दर्शाने का पूरा प्रयत्न किया गया है। मसीहीयत के आरम्भ के बाद के दो हज़ार वर्षों में अनेक रीति-रिवाजों को जोड़कर आज इसे एक नए रूप में पेश किया जा रहा है। कुछ अनुचित और गलत धारणाएँ भी उसमें जोड़ी गई हैं, जिनका वास्तविक मसीहीयत से कोई सम्बन्ध नहीं है।

आज की मसीहीयत में जिन रीति-रिवाज़ों को माना और अपनाया जा रहा है उन्हें देखकर बहुतेरे लोग उलझन में पड़कर सोचते हैं कि यह सब क्या है? शायद आप भी कुछ ऐसे ही लोगों के सम्पर्क में कभी आए होंगे जिनके जीवन और कामों को देखकर आपने सोचा होगा कि मसीही लोग सही नहीं हैं। यदि ऐसा है, तो आपको यह पुस्तक अवश्य ही पढ़नी चाहिए, ताकि आप यह जानें कि वास्तव में मसीहीयत क्या है? मसीहीयत को ठीक तरह से समझने के लिए बाइबल के नए नियम के दृष्टिकोण से मसीहीयत को देखने की आवश्यकता है। उन लोगों के जीवनों और कामों के द्वारा मसीहीयत का मूल्यांकन न करें जो अपने आप को मसीही तो कहते हैं, पर उनमें से अधिकतर उस मसीहीयत का पालन नहीं करते जिसका वर्णन हमें बाइबल के नए नियम में मिलता है। गलत और झूठी शिक्षाओं के कारण भी अनेकों लोग आज बाइबल की सच्ची मसीहीयत से दूर हैं। हर एक व्यक्ति जो आज अपने आपको मसीही कहता है, वास्तव में मसीही कहलाने के योग्य नहीं है। इसलिये मसीहीयत को ठीक से समझने के लिये यीशु मसीह को, जो मसीहीयत का संस्थापक है, समझने की आवश्यकता है। यीशु मसीह और उसकी शिक्षाओं के द्वारा ही मसीहीयत का मूल्यांकन करें, मनुष्यों के जीवनों के द्वारा नहीं, क्योंकि मनुष्यों में खोट हो सकता है, पर वोह जो मसीहीयत का संस्थापक है, उसमें और उसकी शिक्षा में कोई दोष नहीं है।

जहां पत्थर इकट्ठा किए गए थे, उस जगह पर मीटिंग

माइकल एल. किंग

इस्राएलियों के प्रतिज्ञा किए हुए देश में अपने बड़े प्रवेश करने से पूर्व यरदन नदी पर पहुंचने पर, परमेश्वर ने इस्राएल के बारहों गोत्रों में से एक-एक पुरुष को यहोवा के संदूक के आगे यरदन पार करने का निर्देश दिया। उनके यरदन के बीच में होने के समय पर पुरुष के लिए एक पत्थर लेकर उसे अपने कांधे पर ले जाकर गिलगाल की उनकी छावनी के निकट अन्य ग्यारह पत्थरों के पास रखना था। इन पत्थरों का महत्व यह था कि जब उनकी आने वाली पीड़ियों ने वहां पर पत्थरों के रखे जाने के बारे मे पूछना था तो उन्होंने बताना था कि उनके पूर्वजों को मिस्र की दासता से छुड़ाया गया था, लाल समुद्र ने रास्ता दिया था, जंगल में उनके लिए इंतजाम किया गया था और दूध और शहद की नदियों वाले देश में रहने के लिए वे सूखी ज़मीन पर से यरदन पार करके आए थे। इस यादगार को और कहानी को

बार-बार सुनाए जाने का उद्देश्य सब देशों के लोग जान लें कि यहोवा का हाथ बलवन्त हैं, और तुम सर्वदा अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानते रहो (यहोशू 4:24)।

पत्थरों की यादगार आने वाली पीढ़ियों के लिए परमेश्वर के महान होने और उसकी करूणा को साबित करती थी ताकि इस्राएलियों में परमेश्वर का प्रेम, आदर, आभार और आराधना उनकी संतान के लिए बनी रहे। कलीसिया के अगुओं, विश्वासी मसीहियों, माता-पिता आदि के रूप में हम अपने, देश, अपने परिवार या कलीसिया के साथ की गई परमेश्वर की भलाई की कौन सी यादगार को छोड़कर जा रहे हैं? क्या हमारी आनेवाली पीढ़ियां परमेश्वर के प्रति हमारे उस बड़े सम्मान के कारण उसे जानेंगी? क्या हम अपनी संतान के लिए जो अभी पैदा नहीं हुई है, परमेश्वर की भलाई के स्वाद को छोड़ कर जाएंगे? क्या हमारे "पत्थरों का ढेर" हमारे जीवनों में परमेश्वर के सामर्थपूर्ण हाथ के काम करने में हमारे विश्वास और हमारे समर्पण की गवाही देगा, जिससे आने वाली पीढ़ियों पर अनन्तकालिन प्रभाव पड़ सके?

हमारे इस प्रकार के जाने में, प्रेम तथा आभार की पुष्टि "पत्थर" बाइबल अध्ययन की प्रबलता, प्रार्थना की गंभीरता, मसीह की देह की वफादारी बपतिस्मे में अपने मन के धोने के लिए हमारा अपने आपको दे देना, परमेश्वर के काम में अगुआई के लिए हमारा समर्पण, विश्वास के द्वारा विपरीत परिस्थितियों, बीमारी और मृत्यु में संभाल लेने में उसके ऊपर हमारा भरोसा।

यादगार का आपका "पत्थर" चाहे जो हो, यह सर्वशक्तिमान के लिए आनन्द, प्रसन्नता, विजय और सम्मान के लिए होना चाहिए। इस्राएलियों के लिए यह अवसर आशा और आनन्द से भरा था, जैसे कि इस पृथ्वी पर मसीही व्यक्ति के प्रवास में पूरा जीवन होना चाहिए।

एक और "पत्थरों का ढेर" है जो इसका दूसरा पहलू दिखाता है। यह इस्राएल के बीच चेतावनी, नाकामी और ठुकराए जाने की यादगार था। आकान ने युद्ध की लूट को चुराकर उसे अपने तम्बू के फर्श के नीचे छुपा दिया था जिससे इस्राएल पर श्राप आना पड़ा। उनकी सैनिक वीरता का कलंक लग गया था और लोगों की परमेश्वर की शक्तिशाली जाति पर नाकामी का हमला हो गया था। महान अगुवे यहोशु के कारण और इसके लिए जिम्मेदार व्यक्ति का पता लगाने के लिए सुनवाई की। क्योंकि उसे मालूम था कि "डेरे में पाप" था। जब पता चल गया कि यह दोष आकान का है तो उसे इस बात के लिए डांट लगाई गई कि उसने "हमें कष्ट दिया" और उसे बताया गया कि "आज के दिन यहोवा तुझी को कष्ट दे" (यहोशू 7:25)। यह एक और पत्थरों के ढेर के बनने का आरंभ था। "तब सब इस्राएलियों ने उसको पत्थरवाह किया; और उनको आग में डालकर जलाया, और उनके ऊपर पत्थर डाल दिए। और उन्होंने उसके ऊपर पत्थरों का बड़ा ढेर लगा दिया जो आज तक बना है; तब यहोवा का भड़का हुआ कोप शांत हो गया। इस कारण उस स्थान का नाम आज तक आकोर (कष्ट देना) तराई पड़ा है" (यहोशू 7:26)।

"पत्थरों के (इन दोनों) ढेरों" में से हमारे जीवन का वर्णन कौन सा ढेर करता

है? क्या हमारा जीवन हमारे लिए परमेश्वर की भलाई के कारण यह दिखाते हुए कि वह हमारे मनों में जीवित है और हमारे मन में उसके लिए बड़ा आदर है, उसके प्रति हमारे आदर और सम्मान के द्वारा सामान्य अर्थ में सारी मनुष्य जाति के प्रति दूसरों के मन में विश्वस पैदा करने का काम करता है? क्या यह कहा जा सकता है कि हमारा जीवन उस समाधि के जैसा है जहां हमारे महान परमेश्वर की महिमा के लिए सेवा करने के बहुत से अवसर मिले तो यही पर हमने उनको वहां दफना दिया है? जब लोग हमारे जीवन के पास से गुजरते और देखते हैं तो क्या वे यह जानते हुए कि "क्या हो सकता था", उदास होकर सिर हिला देते हैं या फिर जो कुछ उन्होंने हमारे जीवन में देखा उससे परमेश्वर की महानता की प्रशंसा करते हैं? प्रिय मित्र क्या आपके जीवन का लक्ष्य इसे समस्या नहीं बल्कि श्रद्धांजलि बनाना है, कब्र नहीं बल्कि उपहार बनाना है; करूणा के दुरुपयोग के बजाय सामर्थ का स्मारक बनाना है?

माताओ, अपने नन्हें बालकों और बालिकाओं को सिखाओ और उनकी आत्मिक बातों में सहायता करो

बैटी बर्टन चोट

भाग एक

हम एक भीड़ से भरे, तेजी से बदलते हुए संसार में रहते हैं, जिसमें बहुत बार हमारे पास बहुत सी बातों के लिए समय नहीं होता। अफसोस की बात है कि हमारी प्राथमिकताओं की सूची में, आमतौर पर सबसे नीचे हमारे बच्चे आते हैं।

माता-पिता की जिम्मेदारी के विषय पर लोगों के अलग-अलग विचार पाए जाते हैं। हम इनमें से तीन बातों पर विचार करना चाहते हैं :

1. बहुत से लोगों की सोच यह रहती हैं कि नन्हें बालक और बच्चे "छोटे" ही तो हैं, इसलिए इतना काफी है कि उन्हें खाने और पहनने को दिया जाये। उनकी अन्य आवश्यकताओं की चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है। बच्चे जब व्यस्क होने लगेंगे तब उनके विचारों पर, उन्हें पेश आने वाली समस्याओं पर, उनकी पसंद-नापसंद पर अधिक ध्यान दिया जा सकता है।

विचार करने वाली बात

आपके पालन-पोषण के बारे में माता-पिता की क्या सोच थी? अपने बच्चों के पालन-पोषण के बारे में आपकी अपनी सोच क्या है? उनके जीवन को ध्यान में रखते हुए आपको क्या लगता है कि बच्चों का पालन-पोषण किस प्रकार से होना चाहिए? एक व्यस्क के रूप में क्या आप बीता समय याद करके सोचने लगते हैं, "यदि मुझे ऐसी पढ़ाई मिली होती, या मैंने ऐसे सीखा होता जैसे इन बच्चों को मिल रहा है, तो मैं कहीं का कहीं पहुंच गया होता या गई होती"? क्या आपको लगता है कि बड़ों

वाली जिम्मेदारियों या परेशनियां आपके ऊपर बचपन में ही पड़ गई थी?

परन्तु बच्चे "छोटे" नहीं हैं। वे ऐसे बच्चे हैं जो बड़े होने की प्रक्रिया में है और उनकी इन आरंभिक वर्षों की हर बात महत्वपूर्ण है, और बड़ी है। यदि माता-पिता दिमाग में यह बिठा लें कि मैं एक बड़े यानी वयस्क का पालन-पोषण कर रहा/रही हूं, जो कुछ भी मैं उसे अब सिखाता/सिखाती हूं वह बड़े होने पर उसके जीने का अंग बन जाएगा; तो इस काम को बहुत ही अलग तरीके से किया जा सकता है।

बच्चे में आरंभिक पांच वर्ष मानसिक और भावनात्मक विकास का महत्वपूर्ण समय होता है। जितना अधिक समय माता-पिता सिखाने, प्रेम बांटने, सिखाने में उसके साथ बिता सकते हैं उतना ही, वह जीवन के लिए बेहतर ढंग से तैयार हो पाएगा।

इसलिये तुम मेरे ये वचन अपने अपने मन और प्राण में धारण किए रहना और तुम घर में बैठे, मार्ग पर चलते लेटते-उठते इनकी चर्चा करके अपने लड़के बालों या बच्चों को सिखाया करना (व्यवस्थाविवरण 11:18-19)। जब आप खाना बना रहे हों, कहीं सफर में जा रहे हो तो परमेश्वर नहीं चाहता कि हम अपने बच्चों को उसके वचन से कमर-कसने को याद दिलाने के किसी भी अवसर को हाथ से जाने दें।

2. बच्चों के संबंध में कुछ माता-पिता की सोच में दूसरी कमी यह होती है कि बच्चों पर अधिक बोझ मत डालो। उसे बचपन जीने दो। बड़ा हो जाएगा, तो सब सीख जाएगा। सारी उम्र यही तो करना है उसे।" इससे बहुत समस्याएं हो सकती है।

विचार करने वाली बात

क्या आपके अपने पालन-पोषण ने आपके अपने बच्चों के पालन पोषण के ढंग को प्रभावित किया है? क्या आप उन माता-पिता में से हें जो अपने बच्चों को वे सब चीजें देना चाहते हैं जिन्हें बचपन में वे पाना तो चाहते थे परन्तु उन्हें नहीं मिल पाई थी? या आपके माता पिता ने आपके लिए यही सब कुछ किया है और अब आप उसको उलट कर अपने बच्चों के हाथ में वे चींज नहीं देना चाहते, ताकि वे संसार की कम से कम भौतिक वस्तुओं में जीवन जीना सीखें? आप अपने बच्चों के साथ उससे अधिक कठोर हैं जितना आपके माता पिता के साथ थे? या कम? किसके मन में किसके लिए अधिक आदर है?

बेशक बच्चों से बड़ों वाली जिम्मेदारियां उठाने की उम्मीद नहीं करनी चाहिए, परन्तु उसे बचपन में ही बिल्कुल बेफिक्र बनने के लिए भी नहीं छोड़ना चाहिए। ऐसा होने पर घर से बाहर निकलने, पढ़ाई पूरी करने, नौकरी करने और फिर अपना स्वयं का परिवार बनाने पर उसे झटका लगेगा। इन जिम्मेदारियों को थोड़ा-थोड़ा करके सीखते हुए, प्रशिक्षण और अनुशासन के बिना बड़ा होने से अचानक उसे ऐसा लगेगा जैसे कोई बिना लाइफ जैकेट के पानी में गिर गया हो। उसे पता नहीं होगा कि वह क्या करे और कैसे करे। और हो सकताहै कि वह अन्त में जिम्मेदारी ही न ले। अमेरिकी परिवारों में एक बड़ी समस्या यह है कि बड़े बच्चे घर से निकलने में झिझकते हैं। और बहुतों के घरों से निकलने पर उनके वैवाहिक सम्बंध टूट जाते हैं, वे काम में टिक नहीं पाते और जल्द ही "घर" के सुरक्षा घेरे में लौट आते हैं। चाहे इसका अर्थ तलाक और बच्चों को खो देना ही हो।

3. एक सोच यह है कि बच्चे को हालात का सामना करने के लिए उसे छोड़

देना चाहिए ताकि उसी माहौल में रहते रहते वह मजबूत बन जाए। यह समझदारी की बात है। सूझबूझ रखने वाले, दूरदर्शी और धैर्य रखने वाले माता पिता की यह सही सोच है।

लड़के को शिक्षा उसी मार्ग की दें जिसमें उसको चलना चाहिये, और वह बुढ़ापे में भी उससे न हटेगा (नीतिवचन 22:6)।

छोटी बच्चियों को पत्नी, मां और गृहणी बनना सीखना आवश्यक है। पहले हर बच्ची के पास पसंदीदा खेल "घर-घर" और गुड्डा-गुड़िया" हुआ करते थे। अब बहुत सी लड़कियों को ऐसे खेल खेलने को नहीं मिलते। वे गुड़ियों के साथ नहीं खेलती, इसके बजाय वे सॉफ्ट बॉल या अन्य खेलों में निपुण हो जाती हैं।

नन्हीं लड़की जिसे अपनी गुड़िया से प्रेम करने और उसे सजाने संवारने और उसकी देखभाल करने को मिलता है, उस के अंदर आमतौर पर मां सी करूणामय भावनाएं आ जाती है। बड़ा होने पर भी स्नेह की क्षमता उसके साथ रहती है। जब उसके अपना कोई बच्चा होगा तो वह उससे वैसे ही दुलार करेगी। मां के रूप में आने वाली बहुत सी भावनाओं से उसके मन में काल्पनिक मां होने के अपने आरंभिक वर्ष याद आएंगे।

यही बात ग्रहस्थी बनाने, साफ-सफाई करने, झाड़ू पोछा करने, चीजों को संवारने, बर्तन धोने में करने पर लागू होती है। जब एक मां गृहणी के रूप में इन बातों में अपनी नन्हीं बच्ची को शामिल करती है तो वह उसमें ज्ञान, हुनर और सुचारू ढंग से किए गए काम की संतुष्टि मिलने की बातें डालती हैं और यदि मां उसे ये सब बातें सिखा रही है तो छोटे लड़कों को गाड़ी धोना, गाड़ी की मरम्मत करना और घर के आस-पास सफाई रखना आदि आदमियों वाली वे सब बातें सीखना आवश्यक है जिन्हें उसे करना आवश्यक है। छोटी उम्र में बेटा चाहे इन सब बातों को नहीं कर पाएगा परन्तु समझदार पिता उसे ऐसा करने में लगाकर सिखाएगा ताकि बड़ा होने पर वह प्रत्येक जिम्मेदारियों को उठा सके।

बेशक बहुत सी महिलाएं घास काटती हैं जबकि पति आम तौर पर बर्तन मांजते, फर्श धोते और बच्चों के कपड़े बदलते हैं। वयस्कों के रूप में पति-पत्नी के एक दूसरे के सहायक होने का प्रशिक्षण देने के लिए बच्चों को घर के काम और जिम्मेदारियों दी जानी आवश्यक हैं। परन्तु साथ ही लड़के के काम को पुरुषों में ढालने में जोर दिया जाना और लड़कियों के काम को स्त्रियों के काम और भावनाओं में ढालना आवश्यक है। नर और मादा दोनों अलग-अलग है। जिन्हें अपनी अपनी भूमिका निभाने के लिए तैयार किया जाता है, तथा प्रशिक्षण उस स्वभाविक विरासत को मजबूत करने के लिए होना चाहिए।

बड़े होने पर बच्चों को पैसे का प्रबंध करने का अनुभव होना, परिवार के खर्च के बारे में पता होना आवश्यक है कि घर का खर्च क्या है, कार का खर्च कितना है, घर का बीमा, भोजन, कपड़े इत्यादि का खर्च क्या है। उन्हें घर का बजट बनाने में शामिल किया जाना चाहिए, तकि उन्हं खर्चे में आने वाली समस्याओं का पता हो। इससे उन्हें बड़ों के संसार को देखने का अधिक वास्तविक दृष्टिकोण मिलने में सहायता मिलेगी।

किशोरों को कागज पत्रों (कर्ज, क्रेडिट कार्ड, इनकम टैक्स, बीमा इत्यादि) का पता होना चाहिए जिन्हें वयस्कों को भरना आवश्यक है और उन्हें इसे जिम्मेदार होना चाहिए। और विशेषकर यह कि उन्हें अपने खर्च या अपने पार्टटाइम की कमाई में से परमेश्वर का हिस्सा अलग से निकालना सिखाना आवश्यक है, ताकि वे कभी परमेश्वर के दोषी न हो। बहुत सारे विवाह पति पत्नी में से किसी एक की या आर्थिक मामलों में गैर जिम्मेदारी के कारण टूट जाते हैं। बचपन में चौकसी से दी गई शिक्षा ऐसा होने से रोक देगी।

आप परमेश्वर के लिये महत्त्वपूर्ण हैं

सूज़ी फ्रैड्रिक

प्रभु की देह अर्थात कलीसिया में प्रत्येक सदस्य महत्त्वपूर्ण है। (रोमियों 12:4-5)। इस बात की तुलना मनुष्य के शरीर से की गई है, जिस प्रकार से हमारे शरीर में प्रत्येक अंग महत्व रखता है तथा प्रत्येक का अपना एक विशेष कार्य है। (देखिये 1 कुरि. 12:14-27)।

जिस प्रकार से परमेश्वर ने देह में प्रत्येक अंग को एक कार्य करने के लिये दिया है उसी प्रकार से प्रत्येक सदस्य के लिये मसीह की देह में कुछ कार्य करने के लिये है। कोई भी दो मसीही एक से नहीं होते, इसलिये जब एक उपासना में नहीं आता या कलीसिया के कार्यों में भाग नहीं लेता तब सारी देह को इससे दु:ख पहुंचता है। यानि देह का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा गायब है।

प्रभु की देह (कलीसिया) में आपका क्या कार्य है? परमेश्वर ने आपको ऐसी कौन-सी योग्यताएं दी हैं जो आप उसके लिये इस्तेमाल कर रहे हैं? क्या घरों में जाकर आप स्त्रियों तथा बच्चों को बाइबल के विषय में बताती है? क्या आप बीमार लोगों की देखभाल करती हैं? क्या आपने कभी निर्धनों को कपड़े सिलकर दिये हैं? क्या जो लोग ज़रूरतमंद है उनकी कभी आपने सहायता की है? क्या आप परमेश्वर की इच्छा के विषय में अपने परिवार के लोगों को बताती हैं? क्या आप दूसरों के प्रति आदर सत्कार दिखाती हैं? अतिथियों के प्रति आपका व्यवहार कैसा है? आप से परमेश्वर कुछ अधिक की अपेक्षा नहीं कर रहा है। वह जानता है कि आप कितना योगदान कर सकती हैं। वह चाहता है कि आप अपनी योग्यताओं को उसके लिये इस्तेमाल करें। जो भी आप में योग्यता है उसे काम में लाने से पीछे न हटें। जब आप परमेश्वर के लिये कार्य करती हैं तब वह आपकी सहायता करेगा।

मत्ती के 25 अध्याय में, यीशु ने एक मनुष्य के विषय में बताया था, जिसने यात्रा पर जाने से पहिले अपने दासों को पैसे दिये थे। उसने प्रत्येक को उसकी योग्यता अनुसार पैसे दिये थे, यह जानते हुए कि उसे इस्तेमाल करने के लिये किसके पास कितनी योग्यता है। एक दास को पांच तोड़े पैसे के रूप में दिये गये

थे, और उसने उस पैसे का अच्छा निवेश किया अर्थात उसे इस्तेमाल करने में बुद्धिमानी बरती। दूसरे दास को दो तोड़े दिये गये, और उसने भी बुद्धिमानी के साथ उसका इस्तेमाल किया। तीसरे दास को एक तोड़ा दिया गया परन्तु उसने उस एक को भी बुद्धिमानी से इस्तेमाल नहीं किया। उसने इसे किसी व्यापार में नहीं लगाया और न ही उससे और कमाने का प्रयास किया। बल्कि उसने उसे ज़मीन में दबा दिया तथा अपने स्वामी के आने की प्रतिक्षा करने लगा। घर का स्वामी यात्रा से जब वापस आया तो वह पहिले तथा दूसरे दास से बहुत प्रसन्न हुआ परन्तु तीसरे दास से वह बहुत क्रोधित हुआ। जिस तोड़े को उसने बुद्धिमानी से इस्तेमाल नहीं किया वह उससे ले लिया गया तथा वो पहिले वाले दास को दे दिया गया। तब स्वामी ने आज्ञा दी कि इस निकम्मे दास को सदा के लिये बाहर के अन्धेरे में डाल दो।

यीशु ने यह कहानी हमें यह दिखाने के लिये बताई है कि यदि हम परमेश्वर द्वारा दी गई योग्यताओं का इस्तेमाल नहीं करेंगे तो हमारे साथ क्या हो सकता है। यदि हमारे पास योग्यताएं है और उन्हें हम छुपाते हैं या फिर उन्हें इस्तेमाल नहीं करते, तब परमेश्वर हमसे वह योग्यताएं ले लेगा। हमें इस प्रकार से नहीं कहना चाहिये, "उसके पास जितनी योग्यता है वो मेरे पास नहीं है, इसलिये मैं चाहती हूं कि यह कार्य वोही करे।" परमेश्वर ने हम में से प्रत्येक को कुछ योग्यताएं दी हैं, और उसके लिये हम में से प्रत्येक महत्त्वपूर्ण है। यदि प्रत्येक मसीही स्त्री जो भी योग्यता उसके पास है उसके अनुसार उसकी सेवा करेगी तो परमेश्वर उससे प्रसन्न होगा। घर का स्वामी उस दास से भी उतना प्रसन्न था जिसे दो तोड़े मिले थे क्योंकि उसने अपने पैसे या योग्यता का बुद्धिमानी से इस्तेमाल किया था। प्रेरित पौलूस ने 1 कुरि. 12 में बताया है कि हमे इसलिये अपने आपको नीचा नहीं समझना चाहिये क्योंकि हमारे पास कम योग्यता है या वो योग्यता नहीं है जो दूसरे के पास है। परमेश्वर प्रत्येक को उसकी योजना अनुसार योग्यता देता है। प्रत्येक जन को अपनी योग्यता का इस प्रकार से इस्तेमाल करना चाहिये ताकि इससे सारी देह (कलीसिया) की उन्नति हो (इफिसियों 4:16)।

एक और बात है जिस पर हमें ध्यान देना चाहिये वोह यह, कि यदि हम अपनी योग्यताओं का इस्तेमाल बुद्धिमानी से करें तब यीशु हम पर अधिक भरोसा करके हमें और भी जिम्मेवारियां दे सकता है। यीशु ने कहा था, "क्योंकि जिस किसी के पास है, उसे और दिया जायेगा, और उसके पास बहुत हो जाएगा, परन्तु जिसके पास नहीं है उससे वह भी जो उसके पास है ले लिया जाएगा।" (मत्ती 25:29)।

आपके जैसा कोई नहीं है। आपका स्थान कोई नहीं ले सकता। जो आपके पास योग्यतायें हैं वो शायद किसी और के पास नहीं है। आईये अपने अन्दर योग्यताओं को खोजें तथा अच्छा से अच्छा कार्य करें। अध्ययन करें, प्रार्थना करें, परमेश्वर हमारी सहायता करेगा तथा हमें और भी अधिक आशीषित करेगा।